मंच पर
प्रमोद जोशी - हितेश भार्गव
बेनी प्रसाद श्रीवास्तव - दीप कुमार
हवलदार - रुपेश भीमटा / ललित शर्मा
मंच पार्श्व
प्रकाश परिकल्पना - केदार ठाकुर
प्रकाश संचालन -अशोक नरवाल
ध्वनि परिकल्पना - नरेश मिंचा
ध्वनि संचालन - रोहित कँवल
मंच सामग्री - मोहित पाल
मंच निर्माण - ललित भारद्वाज
मंच विन्यास - राकेश कुमार
वेशभूषा - सुरीना शर्मा
रूप सज्जा - नीरज पराशर
प्रस्तुति संयोजक -विकास शर्मा
पोस्टर एवं स्मारिका - अमला रॉय
मंच व्यवस्थापक - कपिल देव शर्मा
सह निर्देशक - अजय शर्मा
लेखक - नरेंद्र गुप्ता एवं सुनील सिन्हा
परिकल्पना एवं निर्देशन - राजिंन्द्र शर्मा (हैप्पी)

विशेष आभार
संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार
उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र प्रयागराज उ. प्र.
भाषा कला एवं संस्कृति विभाग, हि. प्र.
गेयटी ड्रामेटिक क्लब शिमला
नरेंद्र गुप्ता एवं सुनील सिन्हा

एक्टिंग स्पेस थिएटर ग्रुप

संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार के सहयोग से

प्रस्तुत करते है

एक तू और एक मैं

नरेन्द्र गुप्ता
सुनील सिन्हा

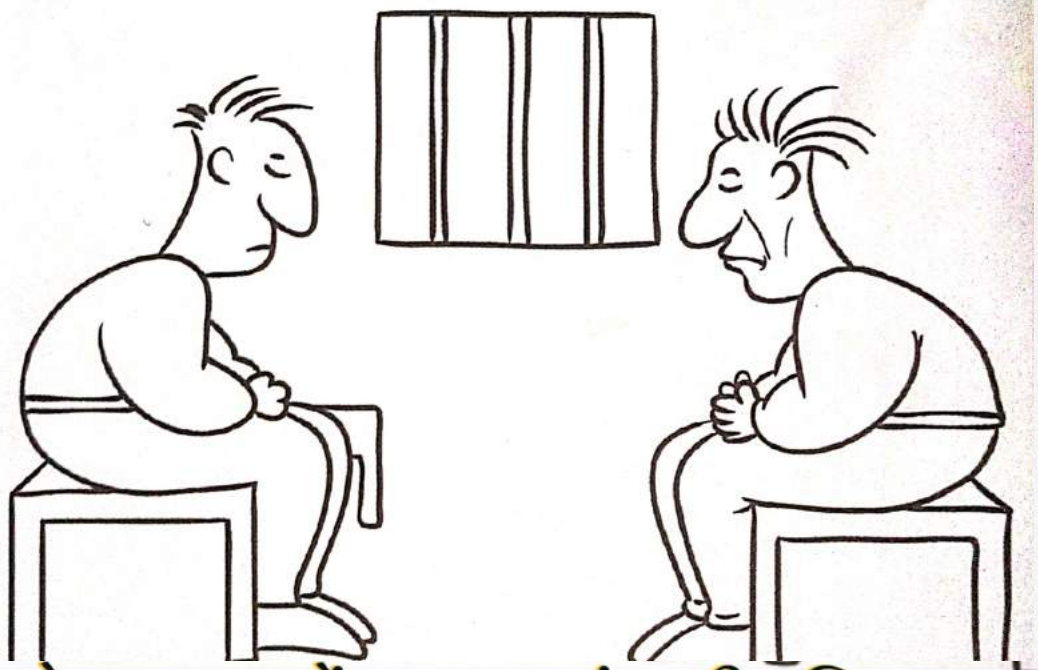

लेखक :- नरेंद्र गुप्ता एवं सुनील सिन्हा
परिकल्पना एवं निर्देशन - राजिन्द्र शर्मा (हैप्पी)
समय - 5:30 सांय दिनांक -1 एवं 2 जनवरी, 2024
स्थान - गौयिक गेयटी थिएटर, मॉल रोड़ शिमला, हि.प्र.
संपर्क :-9819827196/9816680059

संस्था के बारे में

श्री राजिन्द्र शर्मा (हैप्पी) ने शिमला व आसपास के कई नए-पुराने रंगकर्मियों के साथ 2001 में शिमला शहर में रंगमंचीय और सांस्कृतिक गतिविधियों के लिए 'एक्टिंग स्पेस' की स्थापना की। इसका मुख्य उद्देश्य अभिनेताओं के लिए एक स्थान पर मिलना, काम करना, नेटवर्क बनाना, अपना दायरा बढ़ाना, अभिनय कौशल को तराशना तथा नए प्रयोग करना है। । 'एक्टिंग स्पेस' तकनीक के साथ स्वयं, विचारों, कल्पना, क्रियात्मकता एवं अभिनय कौशल को प्रदर्शित करने और नाटक निर्माण का मंच है। 'एक्टिंग स्पेस' हिमाचल की सांस्कृतिक विरासत, रंगमंच और लोक नाट्यों के प्रचार-प्रसार के लिए एक प्रसिद्ध मंच है। हमारी विशेषज्ञ टीम और नाट्य शिक्षकों के पास पूरी तरह से पेशेवर दृष्टिकोण का अनुभव है जो समय-समय पर कार्यशालाओं द्वारा हमारी तकनीकों और ज्ञान को साझा करते हैं। संस्था की शैली निरंतर प्रशिक्षण और अभ्यास पर आधारित है (यानि करके सीखना) और इसमें नाटक प्रस्तुति के सभी पहलुओं को शामिल किया जाता है: अभिनय, निर्देशन और लेखन।
संस्था द्वारा कई पूर्ण नाटकों, लघु नाटकों, वृत्तचित्रों तथा लघु फिल्मों का मंचन देश तथा प्रदेश के विभिन्न स्थानों में लगातार किये जाते रहे हैं। संस्था निरंतर अपने आदर्शों पर चलते हुए कला के संवर्धन के लिए वचनबद्ध है!

नाटक के बारे में

एक मैं और एक तू।

लेखक: नरेन्द्र गुप्ता व सुनील सिंहा।

प्रमोद जोशी एक असफल क्रिमिनल है और बी. पी. श्रीवास्तव एक असफल वकील। क्रिमिनल प्रमोद जोशी एक जेंटल चायवाला है जो अपनी बीवी के कत्ल के आरोप में हवालात के अंदर है। वकील बी. पी. श्रीवास्तव एक हताश और निराश वकील है जिसे 20-25 साल के बाद कोई केस हाथ आया है। उसने सालों तक उस चीज़ का इंतज़ार किया है जो कभी हाथ आई ही नहीं। प्रमोद जोशी का केस उसके लिए एक बहुत बड़ा मौका बन कर आता है। इसलिए बी. पी. श्रीवास्तव इस केस में अपना सारा ज्ञान, बौद्धिकता और अनुभव झोंक देना चाहता है जो हमेंशा से उसके सबसे बड़े और मशहूर वकील बनने के सपने को दिखाता है। लेकिन केस जीतने के लिए पहले केस लड़ना पड़ता है जिसके लिए उसे प्रमोद जोशी के पूरे सहयोग की आवश्यकता है, जो थोड़ी बातचीत के बाद तैयार भी हो जाता है! तो इस तरह शुरू होता है रिहर्सलों का दौर। सवालों और जवाबों का सिलसिला। केस से सम्बंधित अलग-अलग पात्रों का अभिनय हास्य की स्थितियाँ पैदा करती हैं जो नाटक में हास्य और उत्सुकता की स्थिति उत्पन्न करता है। लेकिन ये स्थिति मात्र हवाई किलों का ही निर्माण करती है। अब इन रिहर्सलों और जिरहों का क्या असर पड़ता है? क्या बी. पी. श्रीवास्तव अपना सपना पूरा कर पाता है? प्रमोद जोशी को अंत में क्या मिलता है? जेल या बेल? ये अपने आप में बहुत रोचक है। ये नाटक बड़ी ही सहजता और हास्य के साथ समाज के सामने कई बड़े-बड़े सवाल छोड़ जाता है और कानून व्यवस्था तथा इंसान की आंतरिक भावनाओं का बखूबी चरित्र चित्रण करता है!

निर्देशकीय

पिछले कुछ वर्षों में कई नाटक पढ़े पर किसी नाटक की पटकथा ने मेरे मनोभावों व चेतना को आंदोलित नहीं किया, जितना 'एक तू और एक मैं' ने किया। यह नरेन्द्र गुप्ता व सुनील सिंहा द्वारा लिखित एक हास्य प्रधान नाटक है। इस नाटक की सब से बड़ी विशेषता यह है कि यह नाटक अभिनय परक है। अभिनेताओं के लिए अपने अभिनय को दिखाने के लिए मनोरंजक संवादों से भरपूर पटकथा है जो पात्रों के अंतर्मन की दशा पर सोचने को मजबूर करती है। साथ ही दर्शकों के लिए एक व्यंगात्मक अनुभूति प्रदान करती है, जिस के कारण दर्शक नाटक व अभिनय से सम्पूर्ण प्रस्तुति के दौरान बंधा रहता है।
इस नाटक को करने की इच्छा वैसे तो कई वर्षों से मन में थी लेकिन कई चुनौतियाँ सामने थीं जैसे लेखक द्वारा मंचन की स्वीकृति का मिलना, सही अभिनेताओं का चयन तथा वित्तीय संसाधनों की व्यवस्था।
कहते हैं ना कि अगर आप का किसी कार्य के प्रति सम्पूर्ण निष्ठा और समर्पण हो तो ब्रह्मांडीय शक्तियां भी आप की सहायता करती हैं। मेरे साथ ऐसा ही हुआ। सचमुच समय के साथ सब कुछ अपने आप ही होता चला गया। नरेंद्र गुप्ता जी और सुनील सिन्हा जी द्वारा मंचन की अनुमति मिलने के बाद दो बहुत अच्छे अभिनेता चयनित किये गए और संस्कृति मंत्रालय द्वारा अनुदान मिलते ही सारी चुनौतियाँ धीरे - धीरे समाप्त होती चली गयीं। आज प्रस्तुति आप के सामने है। अब दर्शकों, समीक्षकों और आलोचकों की प्रतिक्रिया का इंतज़ार है।

राजिंन्द्र शर्मा (हैप्पी)
निर्देशक

निर्देशक का परिचय

राजिन्द्र शर्मा (हैप्पी)

नाट्य कला व अभिनय के क्षेत्र से राजिन्द्र शर्मा (हैप्पी) का संबंध लगभग 27 सालों से है।
इस दौरान इन्होने कई रंगमंच की विभूतियों के निर्देशन में अनेक नाट्य प्रस्तुतियां कीं। अमला राय, आलोक चटर्जी, एन. जी रौशन, सत्यव्रत राउत, लोकेंद्र त्रिवेदी और सुरेश शर्मा जैसे कई महान रंगकर्मियों के साथ काम किया। वर्ष 1999-2000 में 'हिमाचल कल्चर रिसर्च फोरम एंड थिएटर रिपेटरी', मंडी से एक वर्ष का आवासीय नाट्य प्रशिक्षण प्राप्त किया। उसके उपरान्त वर्ष 2001 में नाटक के प्रोत्साहन हेतु शिमला में एक नाट्य संस्था "एक्टिंग स्पेस" का गठन किया। तब से ये संस्था शिमला के रंगमंच जगत में सक्रिय तौर पर कार्य करती आ रही है। इस अंतराल में हैप्पी के निर्देशन में संस्था द्वारा कई नाटक खेले गए जिनमें होली, भगत सिंह की वापसी, परमात्मा का कुत्ता, हम बिहार में चुनाव लड़ रहे हैं, गुरुदक्षिणा, अंधेर नगरी चौपट राजा, एक था गधा उर्फ अल्लादाद खां, सड़क और 20 नुक्कड़ नाटकों के मंचन प्रमुख हैं।
दो साल अमर उजाला एवं दैनिक भास्कर के लिए बतौर नाट्य समीक्षक काम किया। इन्होंने मुम्बई में नामी ग्रामी इंटरनेशनल बैकलॉरीयट स्कूलों और अन्य बड़ी-बड़ी संस्थाओं में रंगमंच का अध्यापन एवं सह निर्माण का कार्य भी किया। साथ ही साथ अभिनेता के रुप में काम करते आ रहे हैं। अभी तक लगभग 80 से ज्यादा टीवी विज्ञापन किये हैं, 12 फिल्मों एवं अनेक टीवी धारवाहिकों में अभिनय किया है। हाल ही में इनकी फ़िल्म '83' बहुत चर्चा में रही। शॉर्ट फिल्म "घराट" का निर्देशन भी किया जो डिजिटल प्लेटफार्म पर उपलब्ध है। 2021-22 में कल्चर मिनिस्ट्री के सहयोग से "दयोठन" (करियाला) एक्टिंग स्पेस' संस्था द्वारा निर्माण किया जिसका निर्देशन भी राजिन्द्र शर्मा (हैप्पी) ने किया।

लेखकों के बारे में

नरेन्द्र गुप्ता

- 1972 से रंग-यात्रा की शुरुआत।
- रंगमंच को शौक के तौर पर अपनाया और आजीविका के स्तर तक जिया।
- विदेशी एवं भारतीय भाषाओं के प्रमुख उल्लेखनीय एवं चर्चित नाटकों के हिंदी रूपांतरों एवं मूल हिंदी में लिखे प्रमुख नाटकों में अभिनेता एवं निर्देशक के तौर पर कार्य।
- लगभग 75 नाटकों में अभिनय एवं 20 नाटकों का निर्देशन।
- लोक कलाओं एवं लोकनाट्यों का अध्ययन एवं लोककलाकारों के साथ नाट्य प्रस्तुतियाँ।
- अनेकों थिएटर ट्रेनिंग वर्कशॉप में अध्यापन। संगीत नाटक अकादमी द्वारा रंगमंच में कार्य के लिए दो बार स्कालर्शिप प्राप्त हुआ।
- अभिनय एवं निर्देशन के अलावा अध्यापन, पठन-पाठन, लेखन, संगीत जैसे-अभिव्यक्ति के माध्यमों से संलग्न।
- गत 45 वर्षों से रंगमंच के साथ फ़िल्मों एवं टी०वी० पर भी कार्यरत।
- बहुचर्चित टीवी शो 'सीआईडी" में फोरेंसिक विशेषज्ञ डॉक्टर सालूँके की भूमिका में बहुत प्रसिद्धि प्राप्त की। जिसके लिए हाल ही में इन्हें इंटरनेशनल फोरेंसिक साइंस कॉनफेरेंस , नई दिल्ली ने 'लाइफटाइम अचीवमेन्ट अवॉर्ड' से नवाज़ा है, समाज में फोरेंसिक साइंस को लेकर जागरूकता बढ़ाने के लिए।

सुनील सिन्हा

- राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय से स्नातक।
- लगभग 45 वर्षों से रंगकर्म में कार्यरत।
- अभिनेता, निर्देशक, संगीतकार, शिक्षण रंगमंच से जुड़ी लगभग हर विधा में कार्यानुभव।
- 25 नाटकों का निर्देशन एवं लगभग 35 नाटकों में अभिनय।
- अनेकों नाट्य प्रस्तुतियों में प्रकाश, ध्वनि एवं संगीत परिकल्पना में संलग्न।
- अनेकों रंग कार्यशालाओं का आयोजन एवं निर्देशन।
- रंगमंच के अध्यापन में विशेष रुचि।
- 'स्टेला एडलर स्टूडियो ऑफ ऐक्टिंग', मुंबई में बतौर वरिष्ठ संकाय अध्यापन किया।
- 'रंगमंच में संगीत' विषय पर भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय ने 'सीनियर फेलोशिप' प्रदान की।
- रंगमंच के साथ-साथ लगभग 38 वर्षों से फ़िल्म और टी०वी० पर भी कार्यरत, अनेकों बहुचर्चित तथा पुरस्कृत फ़िल्मों एवं
- टी०वी० सीरियल में अभिनय जिनमे माचिस, रुदाली, आरक्षण, नेता जी, कट्टी-बट्टी, मंटो और पैड मैन उल्लेखनीय हैं।